# रस

रस से तात्पर्य काव्य का आनंद प्राप्त करने से है। जब हम किसी कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, फ़िल्म आदि को पढ़ते, देखते या सुनते हैं, तब पाठक, श्रोता या दर्शक को जिस सुख, दु:ख एवं आनंद की अनुभूति होती है, वही काव्य में रस कहलाता है।

## रस के अवयव/अंग

रस के चार अवयव या अंग हैं—स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी या व्यभिचारी भाव। इन चारों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

### 1. स्थायी भाव

प्रत्येक मनुष्य के चित्त में प्रेम, दु:ख, क्रोध, आश्चर्य, उत्साह आदि भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं, उन्हें ही स्थायी भाव कहते हैं। स्थायी भाव हमारे हृदय में छिपे होते हैं तथा ये अनुकूल वातावरण उपस्थित होने पर स्वयं ही जाग्रत हो उठते हैं।

### 2. विभाव

विभाव से अभिप्राय उन वस्तुओं एवं विषयों के वर्णन से है, जिनके प्रति सहृदय के मन में किसी प्रकार का भाव या संवेदना जागृत होती है अर्थात् भाव के जो कारण होते हैं, उन्हें विभाव कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं—आलंबन और उद्दीपन।

#### (i) आलंबन विभाव

जिन व्यक्तियों या पात्रों के आलंबन या सहारे से स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, वे आलंबन विभाव कहलाते हैं; जैसे—नायक-नायिका। आलंबन के भी दो प्रकार हैं

(क) **आश्रय** जिस व्यक्ति के मन में रति (प्रेम), करुणा, शोक आदि विभिन्न भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय आलंबन कहते हैं।

(ख) **विषय** जिस वस्तु या व्यक्ति के लिए आश्रय के मन में भाव उत्पन्न होते हैं, उसे विषय आलंबन कहते हैं।

*उदाहरण के लिए*—यदि राम के मन में सीता के प्रति रति का भाव जाग्रत होता है, तो राम आश्रय होंगे और सीता विषय। उसी प्रकार यदि सीता के मन में राम के प्रति रति भाव उत्पन्न हो, तो सीता आश्रय और राम विषय होंगे।

#### (ii) उद्दीपन विभाव

आश्रय के मन में उत्पन्न हुए स्थायी भाव को और तीव्र करने वाले विषय की बाहरी चेष्टाओं और बाह्य वातावरण को उद्दीपन विभाव कहते हैं।

*उदाहरण के लिए*—दुष्यंत शिकार खेलते हुए ऋषि कण्व के आश्रम में पहुँच जाते हैं। वहाँ वे शकुंतला को देखते हैं। शकुंतला को देखकर दुष्यंत के मन में आकर्षण या रति भाव उत्पन्न होता है। उस समय शकुंतला की शारीरिक चेष्टाएँ दुष्यंत के मन में रति भाव को और अधिक तीव्र करती हैं। नायिका शकुंतला की शारीरिक चेष्टाएँ तथा वन प्रदेश के अनुकूल वातावरण को उद्दीपन विभाव कहा जाएगा।

### 3. अनुभाव

अनु का अर्थ है—पीछे अर्थात् बाद में। स्थायी भाव के उत्पन्न होने पर उसके बाद जो भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें अनुभाव कहा जाता है।

अनुभाव चार प्रकार के होते हैं

(i) **सात्विक** जो अनुभाव मन में आए भाव के कारण स्वत: प्रकट हो जाते हैं, वे सात्विक हैं।

(ii) **कायिक** शरीर में होने वाले अनुभाव कायिक हैं।

(iii) **वाचिक** काव्य में नायक अथवा नायिका द्वारा भाव-दशा के कारण वचन में आए परिवर्तन को वाचिक अनुभाव कहते हैं।

(iv) **आहार्य** नायक-नायिका की वेशभूषा द्वारा भाव प्रदर्शन आहार्य अनुभाव कहलाते हैं।

### 4. संचारी या व्यभिचारी भाव

मन के चंचल या अस्थिर विकारों को संचारी भाव कहते हैं। स्थायी भाव के बदलने पर ये भाव परिवर्तित होते रहते हैं, इनका नाम 'संचारी भाव' रखे जाने के पीछे यह कारण भी है। संचारी भावों को व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। *उदाहरण के लिए*—शकुंतला के प्रति रति भाव के कारण उसे देखकर दुष्यंत के मन में मोह, हर्ष, आवेग आदि जो भाव उत्पन्न होंगे, उन्हें संचारी भाव कहेंगे।

संचारी भावों की संख्या तैंतीस (33) बताई गई है। इनमें से मुख्य संचारी भाव हैं—शंका, निद्रा, मद, आलस्य, दीनता, चिंता, मोह, स्मृति, धैर्य, लज्जा, चपलता, आवेग, हर्ष, गर्व, विषाद, उत्सुकता, उग्रता, त्रास आदि।

| रस | स्थायी भाव | संचारी भाव |
|---|---|---|
| श्रृंगार | रति | स्मृति, हर्ष, मोह आदि |
| हास्य | हास | हर्ष, चपलता, लज्जा आदि |
| करुण | शोक | ग्लानि, शंका, चिंता आदि |
| रौद्र | क्रोध | उग्रता, क्रोध आदि |
| वीर | उत्साह | आवेग, गर्व आदि |
| भयानक | भय | डर, शंका, चिंता आदि |
| वीभत्स | जुगुप्सा (घृणा) | दीनता, निर्वेद, घृणा आदि |
| अद्‌भुत | विस्मय | हर्ष, स्मृति, घृणा आदि |
| शांत | निर्वेद (वैराग्य) | हर्ष, प्रसन्नता, विस्मय आदि |
| वात्सल्य | वत्सल | वत्सलता, हर्ष आदि |
| भक्ति | अनुराग/ईश्वर विषयक रति | हर्ष, गर्व, निर्वेद, औत्सुक्य आदि |

## रस के भेद

रस के मुख्यत: नौ भेद होते हैं। बाद के आचार्यों ने दो और भावों को स्थायी भाव की मान्यता देकर रसों की संख्या ग्यारह बताई है। ये रस निम्नलिखित हैं

1. **श्रृंगार रस** जब नायक-नायिका के मन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम (लगाव) उत्पन्न होकर विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के योग से स्थायी भाव रति जाग्रत हो, तो 'श्रृंगार रस' कहलाता है। इसे 'रसराज' भी कहा जाता है। इसका स्थायी भाव रति (प्रेम) है।
   इसके दो भेद होते हैं
   (i) संयोग श्रृंगार
   (ii) वियोग अथवा विप्रलंभ श्रृंगार
2. **करुण रस** जब प्रिय या मनचाही वस्तु के नष्ट होने या उसका कोई अनिष्ट होने पर हृदय शोक से भर जाए, तब 'करुण रस' जाग्रत होता है।
3. **वीर रस** युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में निहित 'उत्साह' स्थायी भाव के जाग्रत होने के प्रभावस्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, उसे 'वीर रस' कहा जाता है।
4. **वीभत्स रस** विभावों, अनुभावों तथा संचारी भावों के मेल से 'घृणा' स्थायी भाव जाग्रत होकर 'वीभत्स रस' को जन्म देता है।
5. **शांत रस** सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति तथा सात्विकता का वर्णन ही 'शांत रस' है।
6. **हास्य रस** किसी पदार्थ या व्यक्ति की असाधारण आकृति, विचित्र वेशभूषा, अनोखी बातों, चेष्टाओं आदि से हृदय में जब विनोद या हास का अनुभव होता है, तब 'हास्य रस' की उत्पत्ति होती है।
7. **रौद्र रस** जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के मेल से 'क्रोध' स्थायी भाव का जन्म हो, तब 'रौद्र रस' की उत्पत्ति होती है।
8. **भयानक रस** भय उत्पन्न करने वाली बातें सुनने अथवा व्यक्ति को देखने, सुनने अथवा उसकी कल्पना करने से मन में भय छा जाए, तो उस वर्णन में 'भयानक रस' विद्यमान रहता है।
9. **अद्‌भुत रस** किसी असाधारण, अलौकिक या आश्चर्य-जनक वस्तु, दृश्य या घटना को देखने, सुनने से जब आश्चर्य होता है, तब अद्‌भुत रस की उत्पत्ति होती है।
10. **वात्सल्य रस** वात्सल्य रस का संबंध छोटे बालक-बालिकाओं के प्रति माता-पिता अथवा सगे-संबंधियों का प्रेम एवं ममता के भाव से है।
11. **भक्ति रस** ईश्वर के प्रति भक्ति भावना स्थायी रूप में मानव संस्कार में प्रतिष्ठित होने से 'भक्ति रस' होता है।

# बहुविकल्पीय प्रश्न

**1.** 'क्रोध' की अधिकता में किस रस की निष्पत्ति होती है?
(क) वीर रस (ख) रौद्र रस
(ग) भयानक रस (घ) करुण रस

**2.** 'शोक' किस रस का स्थायी भाव है?
(क) हास्य रस (ख) शृंगार रस
(ग) करुण रस (घ) शांत रस

**3.** 'निर्वेद' किस रस का स्थायी भाव है?
*(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)*
(क) शांत रस (ख) करुण रस
(ग) हास्य रस (घ) शृंगार रस

**4.** 'वीभत्स रस' का स्थायी भाव है
*(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)*
(क) उत्साह (ख) शोक
(ग) जुगुप्सा (घ) हास

**5.** शृंगार रस का स्थायी भाव है
*(CBSE 2020, Modified)*
(क) रति (ख) शोक
(ग) उत्साह (घ) निर्वेद

**6.** किस रस को 'रसराज' रस भी कहा जाता है?
*(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)*
(क) वीर रस (ख) शृंगार रस
(ग) शांत रस (घ) करुण रस

**7.** भय की अधिकता में किस रस की निष्पत्ति होती है?
*(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2020)*
(क) वीर रस (ख) करुण रस
(ग) भयानक रस (घ) रौद्र रस

**8.** हास्य रस का स्थायी भाव होगा
*(CBSE 2020, Modified)*
(क) विस्मय (ख) निर्वेद
(ग) हास (घ) वत्सल

**9.** अद्‌भुत रस का स्थायी भाव लिखिए।
(क) भय (ख) विस्मय
(ग) क्रोध (घ) उत्साह

**10.** 'अनुराग' किस रस का स्थायी भाव है?
(क) भक्ति रस (ख) शांत रस
(ग) वीभत्स रस (घ) वीर रस

**11.** 'शोक' की अधिकता में किस रस की निष्पत्ति होती है?
(क) हास्य रस (ख) वियोग शृंगार रस
(ग) करुण रस (घ) अद्‌भुत रस

**12.** विषाद और चिंता संचारी भावों से किस रस की निष्पत्ति होती है?
(क) संयोग शृंगार रस (ख) वियोग शृंगार रस
(ग) करुण रस (घ) वीभत्स रस

**13.** गर्व और उन्माद संचारी भावों से किस रस की निष्पत्ति होती है?
(क) रौद्र रस (ख) वीर रस
(ग) भयानक रस (घ) वीभत्स रस

**14.** विप्रलंभ शृंगार रस किसे कहा जाता है?
(क) संयोग शृंगार रस (ख) हास्य रस
(ग) वियोग शृंगार रस (घ) वीर रस

**15.** 'लौकिक वस्तुओं के प्रति उदासीनता' किस रस की विशेषता है?
(क) भक्ति रस (ख) वीर रस
(ग) करुण रस (घ) शांत रस

**16.** 'तनकर भाला यूँ बोल उठा
राणा मुझको विश्राम न दें।
मुझको वैरी से हृदय-क्षोभ
तू तनिक मुझे आराम न दे।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है
(क) वीर रस (ख) शांत रस
(ग) करुण रस (घ) रौद्र रस

**17.** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में रस पहचानकर लिखिए
'उस काल मारे क्रोध के, तनु काँपने उनका लगा
मानो हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जगा'
*(CBSE 2020, Modified)*
(क) शृंगार रस (ख) वीर रस
(ग) रौद्र रस (घ) शांत रस

**18.** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में रस पहचानकर लिखिए
'छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए
मत झुको अनय पर, भले व्योम ही फट जाए'
*(CBSE 2020, Modified)*
(क) करुण रस (ख) हास्य रस
(ग) वीभत्स रस (घ) वीर रस

**19.** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में रस पहचानकर लिखिए *(CBSE 2020, Modified)*

'अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु
चकित भई गद्‌गद् वचन, विकसित दृग पुलकातु'

(क) अद्‌भुत रस (ख) शांत रस
(ग) शृंगार रस (घ) करुण रस

**20.** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में रस पहचानकर रस का नाम लिखिए *(CBSE 2020, Modified)*

'बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही'

(क) वीर रस (ख) वीभत्स रस
(ग) शांत रस (घ) रौद्र रस

**21.** निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में रस पहचानकर रस का नाम लिखिए *(CBSE 2020, Modified)*

'वह लता वहीं की, जहाँ कली
तू खिली, स्नेह से हिली, पली
अंत भी उसी गोद में शरण
ली मूँदे दृग वर महामरण'

(क) हास्य रस (ख) शृंगार रस
(ग) करुण रस (घ) वीभत्स रस

**22.** 'नाना वाहन नाना वेषा,
विहसे सि समाज निज देखा।
कोउ मुख-हीन बिपुल मुख काहू,
बिन पद-कर कोउ बहु पद-बाहु।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) वीर रस (ख) रौद्र रस
(ग) हास्य रस (घ) करुण रस

**23.** 'जब मैं था तब हरि नाहिं,
अब हरि है मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिट गया,
जब दीपक देख्या माहिं।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) अद्‌भुत रस (ख) वीभत्स रस
(ग) शांत रस (घ) भक्ति रस

**24.** 'चलत देखि जसुमति सुख पावै,
ठुमुकि ठुमुकि पग धरनी रेंगत, जननी देखि दिखावै'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) हास्य रस (ख) करुण रस
(ग) वीर रस (घ) वात्सल्य रस

**25.** 'सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा।
सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
न त मारे जैहहिं सब राजा।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) अद्‌भुत रस (ख) रौद्र रस
(ग) करुण रस (घ) भयानक रस

**26.** 'एक ओर अजगरहि लखि,
एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही,
परयो मूरछा खाय।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) भयानक रस (ख) वीभत्स रस
(ग) वीर रस (घ) करुण रस

**27.** 'आँखें निकाल उड़ जाते,
क्षण भर उड़कर आ जाते।
शव जीभ खींचकर कौवे,
चुभला-चुभला कर खाते।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) वीभत्स रस (ख) भयानक रस
(ग) अद्‌भुत रस (घ) वीर रस

**28.** 'देख सुदामा की दीन दशा,
करुणा करके करुणा निधि रोय।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं,
नैनन के जलहुँ सो पग धोय।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) वियोग शृंगार रस (ख) करुण रस
(ग) वीर रस (घ) अद्‌भुत रस

**29.** 'कहेउ राम वियोग तब सीता।
मो कहँ सकल भए विपरीता।।
नूतन किसलय मनहुँ कृसानू।
काल-निसा-सम निसि ससि भानू।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) संयोग शृंगार रस (ख) करुण रस
(ग) वियोग शृंगार रस (घ) वीर रस

**30.** 'कौसिक सुनहु मंद येहु बालुक,
कुटिल कालबस निज कुल घालुक।
भानुबंस राके स कलंकू,
निपट निरंकुसु अबुधु असंकू।।'
उपरोक्त काव्य पंक्तियों में निहित रस है

(क) शृंगार रस (ख) हास्य रस
(ग) रौद्र रस (घ) वीर रस

**31.** **'वह आता–**
**दो टूक कलेजे के करता पछताता**
**पथ पर आता**
**पेट, पीठ दोनों मिलकर हैं एक**
**चल रहा लकुटिया टेक'**
**उपरोक्त काव्य-पंक्तियों से किस स्थायी भाव की निष्पत्ति हो रही है?**
(क) हास
(ख) शोक
(ग) उत्साह
(घ) रति

**32.** **'हे सारथे ! हैं द्रोण क्या,**
**देवेंद्र भी आकर अड़ें,**
**है खेल क्षत्रिय बालकों का,**
**व्यूह-भेदन कर लड़े।'**
**उपरोक्त काव्य-पंक्तियों में किस स्थायी भाव की निष्पत्ति हुई है?**
(क) रति (ख) भय
(ग) क्रोध (घ) उत्साह

**33.** **'उधौ, तुम हौ अति बड़भागी**
**अपरस रहता लगा तैं नाहिन मन अनुरागी'**
**उपरोक्त काव्य-पंक्तियों में कौन-सा स्थायी भाव है?**
(क) ईश्वर विषयक रति (ख) निर्वेद
(ग) रति (घ) वत्सल

**34.** **'यशोदा हरि पालनै झुलावै।**
**हलरावै दुलरावै, मल्हरावै, जोइ-सोइ कछु गावै।**
**यसुमति मन अभिलाष करै।**
**कब मेरी लाल छुटुरुवन रेंगै,**
**कब धरनि पग द्वै धरै।।'**
**उपरोक्त काव्य-पंक्तियों में कौन-सा स्थायी भाव है?**
(क) उत्साह (ख) निर्वेद
(ग) क्रोध (घ) वत्सल

**35.** **'नभ ते झटपट बाज लखि, भूल्यो सकल प्रपंच।**
**कंपिट तन व्याकुल नयन लावक हिल्यौ न रंच।।'**
**उपरोक्त काव्य-पंक्तियों में कौन-सा स्थायी भाव है?**
(क) क्रोध (ख) घृणा
(ग) भय (घ) उत्साह

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *1.* (ख) | *2.* (ग) | *3.* (क) | *4.* (ग) | *5.* (क) | *6.* (ख) | *7.* (ग) | *8.* (ग) | *9.* (ख) | *10.* (क) |
| *11.* (ग) | *12.* (ख) | *13.* (ख) | *14.* (ग) | *15.* (घ) | *16.* (क) | *17.* (ग) | *18.* (घ) | *19.* (क) | *20.* (घ) |
| *21.* (ग) | *22.* (ग) | *23.* (ग) | *24.* (घ) | *25.* (ख) | *26.* (क) | *27.* (क) | *28.* (ख) | *29.* (ग) | *30.* (ग) |
| *31.* (ख) | *32.* (घ) | *33.* (ग) | *34.* (घ) | *35.* (ग) | | | | | |

## व्याख्या सहित उत्तर

*16.* *(क)* प्रस्तुत पंक्तियों में 'उत्साह' स्थायी भाव, आश्रय भाला, आलंबन युद्ध का दृश्य अनुभाव शत्रु को मारने का भाव तथा संचारी भाव गर्व, हर्ष, उत्सुकता आदि के कारण वीर रस की निष्पत्ति हुई है।

*17.* *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव 'क्रोध', आश्रय अर्जुन, आलंबन युद्ध का दृश्य, अनुभाव शरीर का काँपना, संचार भाव अमर्ष-उग्रता, कंप आदि के कारण रौद्र रस की निष्पत्ति हुई है।

*18.* *(घ)* प्रस्तुत पंक्तियों में 'उत्साह' स्थायी भाव, आश्रय वीर व्यक्ति, आलंबन परतंत्र देश, अनुभाव देश को स्वतंत्र कराने का भाव तथा संचारी भाव गर्व, हर्ष, उत्सुकता आदि के कारण वीर रस की निष्पत्ति हुई है।

*19.* *(क)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव विस्मय, ईश्वर का विराट स्वरूप आलंबन, ईश्वर के अद्भुत क्रियाकलाप उद्दीपन, अवाक् रह जाना अनुभाव और भ्रम, औत्सुम्य, चिंता आदि संचारी भाव हैं। इन सबके कारण यहाँ अद्भुत रस की निष्पत्ति हुई है।

*20.* *(घ)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव क्रोध, आश्रय परशुराम, आलंबन लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण वचन, उद्दीपन लक्ष्मण के वचनों की कठोरता अनुभाव होंठ फड़कना, क्रोध में काँपना तथा संचारी भाव अमर्ष, उग्रता, कंपन हैं। इन सबके कारण यहाँ रौद्र रस की निष्पत्ति हुई है।

*21.* *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव शोक, कवि की पुत्री आलंबन कवि आश्रय, कवि की पुत्री की मृत्यु उद्दीपन, रोना, विलाप करना अनुभाव और स्मृति मोह, उद्वेग आदि संचारी भाव हैं। इन सबके कारण यहाँ करुण रस की निष्पत्ति हुई है।

*22.* *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव हास, आलंबन शिव समाज, आश्रय शिव, उद्दीपन विचित्र वेशभूषा, शिवजी का हँसना अनुभाव तथा रोमांच, हर्ष, चपलता आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ हास्य रस की निष्पत्ति हुई है।

**23.** *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में निर्वेद स्थायी भाव, आलंबन सांसारिक सुख-साधन, उद्दीपन हृदय में भगवान का अनुभव करना रोमांच अनुभाव तथा हर्ष, स्मृति संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ शांत रस की निष्पत्ति हुई है।

**24.** *(घ)* प्रस्तुत पंक्तियों में पुत्र के प्रति स्नेह के कारण उत्पन्न 'वत्सल' स्थायी भाव, आलंबन बाल कृष्ण, आश्रय यशोदा, उद्दीपन बाल कृष्ण को चलते हुए देखना तथा अपने पुत्र को गोद में लेने, उससे बात करना, उसकी बाल लीला दिखाना अनुभाव और हर्ष, आवेग आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ वात्सल्य रस की निष्पत्ति हुई है।

**25.** *(ख)* प्रस्तुत पंक्तियों में परशुराम द्वारा किया गया क्रोध स्थायी भाव, आश्रय परशुराम, आलंबन शिव धनुष का टूटना, उद्दीपन शिव धनुष को टूटे हुए देखना, क्रोध में आँखें लाल होना, भुजाएँ फड़कना अनुभाव तथा उग्रता, अमर्ष आदि। संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ रौद्र रस की निष्पत्ति हुई है।

**26.** *(क)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाषी पथिक द्वारा उत्पन्न 'भय', पथिक आश्रय, शेर और अजगर आलंबन, शेर और अजगर की भयानक आकृतियाँ उद्दीपन, पथिक का मूर्च्छित होना अनुभाव और दैन्य, शंका, व्याधि, त्रास, निर्वेद, अपस्मार आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ भयानक रस की निष्पत्ति हुईहै।

**27.** (क) प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव जुगुप्सा (घृणा), आलंबन शव, मांस, शमशान का दृश्य, कौओं का मांस को नोचना, खाना उद्दीपन, नायक का रस के बारे में विचार करना अनुभाव, आश्रय नायक, दर्शक तथा मोह, ग्लानि, आवेग, व्याधि आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ वीभत्स रस की निष्पत्ति हुई है।

**28.** *(ख)* प्रस्तुत पंक्तियों में स्थायी भाव शोक, सुदामा आलंबन, श्रीकृष्ण आश्रय, सुदामा की दीन-दशा उद्दीपन, श्रीकृष्ण का सुदामा की दशा को देखकर रोना अनुभाव और स्मृति, मोह, उद्वेग, कंप आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ करुण रस की निष्पत्ति हुई है।

**29.** *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में रति स्थायी भाव, आश्रय राम, आलंबन सीता, प्राकृतिक दृश्य उद्दीपन, पुलकना, काँपना, अश्रु बहाना अनुभाव तथा चिंता, विषाद, दीनता आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ वियोग शृंगार रस की निष्पत्ति हुई है।

**30.** *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में परशुराम द्वारा किया गया 'क्रोध' स्थायी भाव, आश्रय परशुराम, आलंबन लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण वचन, उद्दीपन लक्ष्मण के वचनों की व्यंग्यता और कठोरता, आँखें लाल होना, भुजाएँ फड़कना अनुभाव तथा अमर्ष, कंप, उग्रता आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ रौद्र रस की निष्पत्ति हुई है।

**31.** *(ख)* प्रस्तुत पंक्तियों में कवि के मन में भिक्षुक की दैन्य दशा को देखकर 'शोक' स्थायी भाव उत्पन्न हुआ है, यहाँ आलंबन भिक्षुक, कवि का मन आश्रय, भिक्षुक का दुर्बल शरीर उद्दीपन, कवि का भिक्षुक को देखकर भावुक और संवेदनशील होना अनुभाव तथा स्मृति, मोह, उद्वेग आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ करुण रस की निष्पत्ति हुई है।

**32.** *(घ)* प्रस्तुत पंक्तियों में कौरवों द्वारा किए गए चक्रव्यूह को तोड़ने की अभिलाषा के कारण अभिमन्यु के मन में 'उत्साह' स्थायी भाव उत्पन्न हुआ है। यहाँ आश्रय अभिमन्यु, द्रोण तथा कौरवादि आलंबन चक्रव्यूह का निर्माण उद्दीपन, अभिमन्यु के वचन अनुभाव तथा गर्व, हर्ष, औत्सुक्य, आवेग, उन्माद, पद आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ वीर रस की निष्पत्ति हुई है।

**33.** *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में गोपियों, जो कृष्ण के मथुरा चले जाने के कारण उनके वियोग में तड़प रही हैं, की व्याकुलता के कारण यहाँ श्रीकृष्ण के प्रति उनके मन में 'रति' स्थायी भाव उत्पन्न हुआ है। यहाँ 'श्रीकृष्ण' आलंबन, गोपियाँ आश्रय, व्याकुल होकर उद्धव को उलाहने देना अनुभाव, श्रीकृष्ण का सौंदर्य उद्दीपन तथा स्मृति, विषाद आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ शृंगार रस की निष्पत्ति हुई है।

**34.** *(घ)* प्रस्तुत पंक्तियों में माता यशोदा के मन में बाल कृष्ण के प्रति स्नेह के कारण 'वत्सल' स्थायी भाव उत्पन्न हुआ है। यहाँ आलंबन बाल कृष्ण, आश्रय यशोदा, बाल कृष्ण की क्रीड़ाएँ, चेष्टाएँ उद्दीपन, बाल कृष्ण को पालने में झुलाना, दुलारना, लोरी गाना, अनुभाव तथा हर्ष, आवेग आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ वात्सल्य रस की निष्पत्ति हुई है।

**35.** *(ग)* प्रस्तुत पंक्तियों में आकाश से बाज झपटने के कारण नायक के मन में 'भय' स्थायी भाव उत्पन्न हुआ है। यहाँ आलंबन बाज, आश्रय नायक (जिस पर बाज झपटा), बाज का झपटना उद्दीपन, भय के कारण काँपना तथा व्याकुल होना अनुभाव और दैन्य, विषाद आदि संचारी भाव हैं। इन सभी के कारण यहाँ भयानक रस की निष्पत्ति हुई है।